



देश की शिक्षा व्यवस्था ICU में है



दुनिया का सबसे युवा देश हम,
फिर सबसे ज़्यादा बेरोज़गार भी हम ही क्यों?

क्योंकि हमारी शिक्षा व्यवस्था एक वसूली तंत्र बन चुकी है।

X



NEET छात्रों का
पढ़ाई का खर्च
=
देश का शिक्षा बजट

X



देश की टॉप 5
परीक्षाओं की
तैयारी का खर्च
=
3 x देश का शिक्षा बजट

X



फॉर्म भरो, फीस भरो,
सालों मेहनत करो,
फिर पेपर लीक

X



"Exams अब
selection नहीं,
rejection की
मशीन बन चुके हैं"

X



स्कूल जाने वाले
1,000 छात्रों
में सिर्फ 12 को अंततः
फॉर्मल रोज़गार

हम गुस्से में क्यों हैं?



हमने मेहनत की;
सिस्टम ने हमारा भरोसा तोड़ दिया।



हमने सपने देखे; पेपर लीक,
भर्ती घोटाले और बेरोज़गारी ने
उन्हें कुचल दिया



हम सिर्फ नौकरी नहीं;
एक ईमानदार व्यवस्था मांग रहे हैं।



हमारा सवाल

- ✓ अगर हम पढ़ें,
- ✓ मेहनत करें,
- ✓ परीक्षा दें,
- ✓ फिर भी भविष्य की कोई
गारंटी नहीं;

तो इस व्यवस्था की
ज़िम्मेदारी कौन लेगा



हमारी मांगें

1



पेपर लीक मुक्त परीक्षा,
जवाबदेह व्यवस्था बने

2



धर्मेंद्र प्रधान इस्तीफा दें,
पेपर लीक माफिया से
गठजोड़ की जांच हो

3



हर परीक्षा और
भर्ती का वार्षिक
कैलेंडर जारी करो

अब और नहीं

अगर हम अब भी चुप रहे;
तो अगला पेपर भी
लीक होगा और अगली
भर्ती भी अटकेगी



शिक्षा बचाओ, भविष्य बचाओ



आइए बदलाव की शुरुआत करें और अपनी
शिक्षा व्यवस्था फिर से बनाये, अपने शहर के
“छात्रों की गूँज” Chapter से जुड़ें,

मिस्ड कॉल करें 9873036161 पर

